YEAR: 2024, ISSUE: 3

RAINBOW SATHI

रेनबो साथी

Rainbow Homes
EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Zeal to bring change

VOLUNTEERING IS THE ROOT OF COMMITMENT TO BUILD A BETTER SOCIETY

कुछ कर दिखाने का जज़्बा

बेहतर समाज बनाने की इच्छा की बुनियाद है वॉलंटियरिंग

TEAM Work

Year 7, Issue 32

Consulting Editor
Bhasha Singh

Editorial Board

CHANDA, (DELHI)

MADHUMITA, (KOLKATA)

M SRAVANTHI (HYDERABAD)

AMITA KUMARI (PATNA)

AMBIKA, DEEPTI, BEZWADA WILSON

Citizen Journalist

ARTI SINGHASAN, DELHI

PRIYADHARSHINI, CHENNAI

MAUSAM KUMARI PATNA

AISHWARYA, BENGALURU

AMAN KUMAR, HYDERABAD

CH.NIKITHA, HYDERABAD

SELVI M, CHENNAI

SANTHOSH, BENGALURU

Child Journalist

AMBIKA KALE, PUNE

ANIKET LOHRA, RANCHI

DEVI.S PRASAD, HYDERABAD

LAKSHMI KUMARI, RANCHI

SUMMI MUNIR, DELHI

DEEPAK AMAN DELHI

K.LAVANYA HYDERABAD

TAPITEJ HYDERABAD

LAXMI BENGALURU

KIRUTHIKA S CHENNAI

CHAMPA PATNA

SHYAM PATNA

V.DURGAPRASAD HYDERABAD

VENISSA NIYOLA D'SOUZA, BENGALURU

DURGA SHETTI PUNE

RUPAL ORAON RANCHI

AAKASH, PATNA

DUBRAJ MALAR RANCHI

SUTAPA DOLUI, KOLKATA

SABINA KHATUN KOLKATA

ARJUN H, CHENNAI

RUPALI TERESA DEY, KOLKATA

KOKILAVANI M, CHENNAI

Support Team

ANANDARAJ
CHENNAI

AFSAR ALAM & BABARAMROHA
DELHI

ANWAR HAQUE
PATNA

SHAIK ABDUL SAMAD & KRANTHI KIRAN
HYDERABAD

Design: ROHIT KUMAR RAI

हम बोलें दुनिया सुने...

"जिंदगी का सबसे स्थायी और अहम सवाल यह है कि हम दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं."

-मार्टिन लूथर किंग जूनियर

दोस्तो

दुनिया में नस्ली भेदभाव के ख़िलाफ़ ऐतिहासिक संघर्ष करने वाले योद्धा मार्टिन लूथर किंग जूनियर का यह कथन जीवन के मकसद को तय करता है।

दूसरों के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने का दूसरा नाम है वॉलंटियरिंग। वॉलंटियरिंग यानी निश्छल मदद। एक अच्छे-नेक काम में निस्वार्थ मदद। सच यह कि दुनिया में कोई भी बड़ा काम बिना लोगों की निस्वार्थ मदद के पूरा नहीं हो सकता है। इसकी जीती-जागती मिसाल हम हैं, हमारी प्यारी संस्था रेनबो होम्स है और इससे जुड़े सैंकड़ों लोग हैं। रेनबो होम्स ने जिस तरह से बेघरबार, निराश्रित या संकट में फंसे बच्चों के लिए केयर की दुनिया में एक ऐतिहासिक काम किया है, वह बिना वॉलंटियरिंग के संभव ही नहीं था।

जब-जब किसी भी तरह का संकट आया, मदद का हाथ भी सामने आया। रेनबो की शक्ति ही है हर होम में फैले मददगारों की टीम। वॉलंटियर बनने के लिए समय नहीं, दिल की जरूरत होती है। इसकी अनगिनत कहानियां होम में रहने वाले बच्चे बता सकते हैं। एक छोटी सी मदद कभी साइंस की ट्यूशन के रूप में सामने आती है तो कभी आर्ट्स एंड क्राफ्ट को सिखाने के रूप में खड़ी हो जाती है। दरअसल, इस तरह की मदद ही हमें हर विपरीत परिस्थिति में जिंदा रखती है और हर मुश्किल का सामना करने की हिम्मत देती है। मंत्र बस एक ही है- कड़ी से कड़ी को जोड़ना ताकि केयर यानि देखभाल का मानवता वाला बंधन बन जाए। उम्मीद है मानवता का यह पेड़ लगातार बढ़ेगा ही। है न विश्वास आपको भी!

हम लड़ेंगे, हम जीतेंगे !!!

We speak, the world listens.

"Life's most persistent and urgent question is, 'What are you doing for others?'"

– Martin Luther King Jr.

Friends

This statement by one of the biggest crusaders to fight a historic battle against racism- Martin Luthur King Jr defines our goal towards life.

Volunteering is the other name for doing selfless service for others. Volunteering means helping others to achieve a greater good. It is true that no big task can be completed in this world without a large number of people coming together for helping out. We, our loving organisation Rainbow Homes and hundreds of people associated with it are a living testimony to this. Rainbow Homes has done a remarkable work in field of child care for homeless, shelter-less or victimised children and this couldn't have been possible without all-out support from many volunteers.

Whenever there was a crisis, there was also a helping hand. Such volunteers spread across Homes are the real strength of Rainbow team. For being a volunteer, you don't need ample time, but a big heart. Children from various Homes can tell a many stories about this. Sometimes a small help in form of a science tuition or an arts & crafts session turn out to be very big. Actually, such help keeps up our spirit even in most adverse conditions, and give us courage to face every challenge. There is just one mantra to it- creating a chain so that child care becomes a human bond. We should hope that this tree off humanity keeps spreading its branches. You all also believe it.. Isn't it!

WE SHALL FIGHT, WE SHALL WIN!!!

Celebrating Two Decades Of Impactful Volunteering At Rainbow Homes

Volunteering is a vital and impactful aspect of the Rainbow Homes Program. We have seen over a decade of diverse volunteers, including people from the Government, Corporations, Civil society groups and individuals, college student internships and exposure visits, and people who started volunteering through our primary contact references and inspiration. Since our inception in 1998, we have had over 2000 volunteers work with children and young adults and help in studies and other areas like sports, arts, dance, and drama.

We always believe in a systematic and continuous volunteering system which helps children, teams and volunteers to get ample time to gel up with each other and work more smoothly.

Nature of Volunteer Engagement

Volunteers are engaged in various activities, including teaching academic and life skills, organising recreational and educational exposure visits, mentoring children, providing career guidance, and assisting in fundraising efforts. Their involvement is based on the volunteer's expertise.

Impact of Volunteer Engagement

Volunteers bring skills, and enthusiasm, enriching the lives of beneficiaries and strengthening program delivery. They create meaningful connections, boost confidence and motivation in children, and contribute to capacity-building efforts. Their contributions also help raise awareness ensuring the program's sustainability and broader community impact.

To ensure a systematic and efficient engagement of volunteers while valuing their time and contributions, RHP has established comprehensive policies and guidelines. This includes a Volunteer Checklist to provide clarity on their roles and responsibilities, a Volunteer Agreement to formalize their commitment, and a Code of Conduct to uphold professional standards and mutual respect. Volunteers complete an Entry Form to document their interests and skills, allowing us to align their contributions with our goals. Additionally, a Feedback Form ensures we continually improve their experience and address their insights. These measures not only maximize their time and impact but also enrich their understanding of child rights, policies, and critical social issues, fostering a deeper connection to our mission.

"Volunteering in child care work is not just about giving your time; it's about shaping lives, building empathy, and becoming a part of a transformative journey that nurtures both the child and the volunteer."

B Arunmai,
Senior Manager, Rainbow Homes Programme (RHP)

रेनबो होम्स में असरदार वॉलंटियरिंग के दो दशक

1998 में हमारी स्थापना के बाद से, हमसे 2000 से अधिक वॉलंटियर्स अलग-अलग समय पर जुड़े हैं जो बच्चों और यंग एडल्ट्स के साथ काम करते हैं और पढ़ाई, खेल, कला, नृत्य और नाटक जैसे अन्य क्षेत्रों में मदद करते हैं।

वॉलंटियर्स रेनबो होम्स कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पहलू है। हमने एक दशक से अधिक समय में अलग अलग तरह के वॉलंटियर्स को देखा है, जिनमें सरकारों, निगमों, नागरिक समाज समूहों, इंटर्नशिप और एक्सपोज़र विजिट पर आने वाले कॉलेज के छात्र शामिल हैं, और वे लोग भी हैं जिन्होंने हमारे परिचितों व जानकारों के संपर्क में आने के बाद प्रेरित होकर वॉलंटियरिंग शुरू की। 1998 में हमारी स्थापना के बाद से, हमसे 2000 से अधिक वॉलंटियर्स अलग-अलग समय पर जुड़े हैं जो बच्चों और यंग एडल्ट्स के साथ काम करते हैं और पढ़ाई, खेल, कला, नृत्य और नाटक जैसे अन्य क्षेत्रों में मदद करते हैं।

हम हमेशा एक नियोजित रूप से और निरंतर वॉलंटियर प्रणाली में विश्वास करते हैं जो बच्चों, टीमों और वॉलंटियर्स को एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने और बेहतर तरीके से काम करने के लिए पर्याप्त समय देने में मदद करती है।

वॉलंटियर के घुलने-मिलने की प्रकृति

होम वॉलंटियर्स विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते हैं, जिनमें पढ़ाई और जीवन कौशल सिखाना, मनोरंजक और एजुकेशनल विजिट का आयोजन करना, बच्चों को सलाह देना, कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करना और होम्स के लिए धन जुटाने के प्रयासों में सहायता करना शामिल है। वॉलंटियर्स की भागीदारी उनकी विशेषज्ञता पर निर्भर करती है।

वॉलंटियर्स की सहभागिता का बच्चों पर असर

वॉलंटियर्स अपने साथ कौशल और उत्साह लेकर आते हैं जिससे बच्चों का जीवन बेहतर बनता है और उनको केंद्रित करके बने कार्यक्रम कामयाब होते हैं। साथ ही साथ वे सबके साथ कारगर संबंध बनाते हैं, बच्चों में आत्मविश्वास और प्रेरणा जगाते हैं और काबिलियत में इजाफा करते हैं। उनका योगदान जागरुकता बढ़ाता है जिससे किसी भी प्रोग्राम की निरंतरता और उसका व्यापक सामुदायिक असर सुनिश्चित होता है।

वॉलंटियर्स के समय और योगदान की अहमियत को समझते हुए उनकी नियोजित व प्रभावशाली भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए रेनबो होम्स प्रोग्राम ने व्यापक नीतियां और दिशानिर्देश तय किए हैं। इसमें उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट किया गया है। उनकी प्रतिबद्धता को औपचारिक बनाने के लिए एक वॉलंटियर समझौता और पेशेवर मानकों व आपसी सम्मान को बनाए रखने के लिए एक आचार संहिता भी बनाई गई है। वॉलंटियर अपनी रुचियों और कौशलों का दस्तावेजीकरण करने के लिए एक एंट्री फॉर्म भरते हैं, जिससे हमें उनके योगदान को अपने लक्ष्यों के साथ संयोजित करने की सुहूलियत मिलती है। इसके अलावा, एक फीडबैक फॉर्म के द्वारा हम यह सुनिश्चित करते है कि हम उनके अनुभव में लगातार सुधार करें और उनकी सलाहों पर अमल कर सकें। इन तरीकों से उनके दिये वक्त का प्रभाव तो बढ़ ही जाता है साथ ही, बाल अधिकारों, नीतियों और महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के बारे में उनकी समझ भी समृद्ध होती है और उनका हमारे मिशन के साथ गहरा रिश्ता बनता है।

"चाइल्ड केयर में वॉलंटियरिंग करना केवल अपना समय देना भर नहीं है, बल्कि यह बच्चों के जीवन को आकार देना, संवेदनशीलता कायम करना और बदलाव के एक ऐसे सफर का हिस्सा बनना है जो बच्चों व वॉलंटियर- दोनों को ही पोषित करता है।

बी अरुणमई, वरिष्ठ प्रबंधक, रेनबो होम्स प्रोग्राम (आरएचपी)

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

PENCIL BEATS: A journey of love and learning with Rainbow Homes

I am software engineer by profession, but my heart lies in community service. Alongside my professional work, I run a youth-led NGO named Vocal for Local Bharat Welfare Foundation, based in Ranchi.

Our connection with Rainbow Homes began over 2.5 years ago, and since then, it has profoundly shaped my perspective and purpose, especially in the field of education. The kids at Rainbow Homes have inspired me and my team to dedicate ourselves to bridging knowledge gaps and nurturing creativity.

At Pencil Beats, as we lovingly call this initiative, we conduct academic classes tailored to address the learning gaps many children face. Beyond academics, we organize creative workshops, art and craft activities, personality development sessions, cultural programs, and even outings. These experiences aim to enrich their lives holistically. We do our best to provide stationery and other essential items for the children. Our volunteers also share and celebrate birthdays with the kids, creating joyful and lasting memories. These small but meaningful efforts help us build strong bonds and bring smiles to their faces.

We feel deeply connected to the children and envision implementing larger projects in collaboration with Rainbow Homes to secure a brighter future for them. While the journey has been challenging, the incredible transformation we've witnessed in these kids keeps us motivated.

I feel heartfelt gratitude to the dedicated team at Rainbow Homes. Looking ahead, we are excited to continue working together, curating impactful initiatives for the betterment of the kids. Together, we aim to make a difference that truly matters. We hope to nurture these beautiful relationships and create a meaningful future for the children of Rainbow Homes.

Shubham Rathore,
Founder & Director, Vocal for Local Bharat Welfare Foundation, Ranchi

पेंसिल बीट्सः रेनबो होम्स के साथ प्रेम व सीखने का सफर

मैं पेशे से सॉफ्टवेयर इंजीनियर हूं और मैं अपने काम के साथ-साथ वोकल फॉर लोकल भारत वेलफेयर फाउंडेशन नाम से एक एनजीओ भी चलाता हूं जो रांची में स्थित है।

हमारा रेनबो होम के साथ नाता तकरीबन ढाई साल पुराना है इसने मेरे दृष्टिकोण और उद्देश्य को गहराई से आकार दिया है, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में। रेनबो होम्स के बच्चों ने मुझे और मेरी टीम को शिक्षा के अंतर को कम करने और रचनात्मकता को पोषित करने की दिशा में काम करने के लिए प्रेरित किया है। हमने अपनी पहल को पेंसिल बीट्स नाम दिया है। इसमें हम कई बच्चों के सामने मौजूद शिक्षा के अंतर को पाटने के लिए विशेष क्लास आयोजित करते हैं। कक्षाओं के अलावा हम रचनात्मक वर्कशॉप, आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधियाँ, व्यक्तित्व विकास सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम और यहाँ तक कि बाहर घूमने के कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं। इन अनुभवों का उद्देश्य उनके जीवन को समग्र रूप से समृद्ध बनाना है। हम यथासंभव बच्चों के लिए स्टेशनरी और अन्य आवश्यक वस्तुएँ अपनी तरफ से उपलब्ध कराने की पूरी कोशिश करते हैं। हमारे वॉलंटियर्स बच्चों के साथ जन्मदिन मनाते हैं, जिससे आनंददायक और अच्छी यादें बनती हैं। ये छोटे छोटे प्रयास हमें मजबूत रिश्ते बनाने और उनके चेहरों पर मुस्कान लाने में मदद देते हैं।

हम बच्चों के साथ गहराई से जुड़ा महसूस करते हैं और उनके लिए एक उज्जवल भविष्य सुरक्षित करने के लिए रेनबो होम्स के साथ मिलकर बड़ी परियोजनाओं को लागू करने की परिकल्पना करते हैं। हालाँकि अब तक की यह यात्रा चुनौतीपूर्ण रही है, लेकिन इन बच्चों में हमने जो अदभुत परिवर्तन देखा है वह हमें आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करता है।

आने वाले वक्त में हम बच्चों की बेहतरी के लिए प्रभावशाली पहल गढ़ते हुए रेनबो होम के साथ काम करना जारी रखने के प्रति उत्साहित हैं। साथ मिलकर, हमारा लक्ष्य एक ऐसा बदलाव लाना है जो वास्तव में मायने रखता है। हम उम्मीद करते हैं कि हम इन खूबसूरत रिश्तों को बनाए रखेंगे और रेनबो होम्स के बच्चों के लिए एक सार्थक भविष्य का निर्माण करते रहेंगे।

शुभम राठौड़,
संस्थापक एवं निदेशक, वोकल फॉर लोकल भारत वेलफेयर फाउंडेशन, रांची

बच्चों को फिट व सेहतमंद रखने का संकल्प

मैं रांची अस्पताल में स्वास्थ्य विभाग में काम करता हूँ और मैं तकरीबन पिछले 5 सालों से रेनबो होम से जुड़ा हूं। होम के बच्चों के साथ काम करने का अलग अहसास होता है। इन बच्चों के लिए हम जनरल हेल्थ चेकअप कैंप आयोजित करते हैं। होम के अलावा आरएफआई टीम के निर्देश व सहयोग से पहाड़ी टोला और मौसी बाड़ी जगन्नाथपुर में कम्युनिटी में भी स्वास्थ्य शिविर हम

आयोजित करते हैं। मेडिकल कैंप में जितनी भी प्रक्रिया करनी होती है, जैसे दवाई वितरित करवाना और लोगो में तालमेल बनाए रखना मेरी जिम्मेदारी होती है।

आरएफआई टीम के साथ मिलकर हेल्थ चेकअप शिविर लगाना बहुत ही संतोषजनक रहता है। यहाँ के बच्चे डॉक्टर के द्वारा दी गई सलाह को मानते हैं और दवा भी समय पर लेते हैं। मुझे होम के बच्चों से बात करना बहुत ही अच्छा लगता है। होम के सभी बच्चे बहुत ही साफ-सफाई से रहते हैं और होम को साफ़ रखने में भी पूरी भूमिका निभाते हैं और स्वास्थ्य सम्बन्धी बातों का ध्यान रखते हैं। होम के सभी बच्चे अनुशासन में रहते है सभी एक दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते है। सभी बच्चे अपने होम की टीम की बात मानते हैं। आरएफआई के सभी बच्चों व टीम से मैं बहुत प्रभावित हूँ। इनके साथ मिलकर स्वास्थ्य शिविर लगाना और उनके साथ समय बिताना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

तबरेज़ इक़बाल सदर, रांची

Keeping kids at Rainbow Home fit and healthy

I am working in the health department of Ranchi Hospital. I have been associated with Rainbow Home for almost 5 years. Working with children from Home gives a very different feeling. We organize general health checkup camps for these children. Apart from the Home, I also organize health camps in the community at Pahari Tola Ranchi and Mausi Bari Jagannathpur Ranchi under the direction, collaboration and cooperation of the RFI team.

Whatever process has to be done in organizing a health camp is my responsibility, like distributing medicines among the people and establishing coordination while organizing a health camp.

It is very satisfying to organize health checkup camps with all the team members of RFI. The children here follow the advice given by the doctor and also take their medicines on time as doctors suggested. I like talking to the children of the home very much. All the children of the home live very cleanly & tidy and play a full role in keeping the home clean and take care of health related matters. All the children of the Home remain disciplined, all are ready to help each other and all the children obey their home team. I am very impressed by all the children and team of RFI. It is great to organize health camps and spend time with them.

Tabrez Iqbal Sadar,
Ranchi

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

Sensitive donors are helpful

At the Rainbow Home we receive funds from donors for our requirements. Donations might be in the form of either special books on special days or a day of remembrance for some, or some things of special requirements. All donors donate generously for various causes. All the children at Home feel gratitude towards these donors.

One of such kind donors for our RFI Home is Hina Madam from Pankhudi Welfare Association, who donate seasonal items like blankets, sweaters, bedsheets, which are very useful for us, especially in winter season. Every time Hina Madam will personally come to Home and bring the items with her to distribute. She will talk to us and give us her best wishes.

During days of Ramzan she will bring new dresses and sweets for the children and make our festival bright and happy. Sanitary kits are also distributed along with shampoos, soaps, brushes, handwash, towels, cloth, pads. Its our pleasure that good donors are coming to our home and supporting with essential items to us. We are very thankful to Pankhudi welfare association for donating truly useful items.

Sownandana, Class 9, Govt girls high school, Rainbow Home, Falaknuma

कई मददगार आते हैं सामने

RFI HOME FOR GIRLS

होम में हमें अपने उपयोग की कई जरूरी वस्तुएं दानदाताओं से मदद के तौर पर मिलती हैं। कभी कोई दानदाता, किसी विशेष दिन के उपलक्ष्य में या फिर किसी यादगार दिन पर विशेष पुस्तकें देते हैं, या फिर हमारी जरूरत की वस्तुएं जिन्हें हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में इस्तेमाल करते हैं। सभी दानदाता अच्छे मकसद के लिए खुलकर मदद देते हैं। होम के सभी बच्चे इसलिए उनके शुक्रगुजार रहते हैं।

ऐसे ही दानदाताओ में से एक हैं पंखुड़ी वेलफेयर एसोसिएशन की हिना मैडम। वे हमारे लिए मौसम के अनुसार जरूरत की चीजें उपलब्ध कराती हैं, जैसे कि कंबल, स्वेटर, चादरें आदि। खास तौर पर सर्दियों के मौसम में इनकी काफी जरूरत रहती है। हर बार हिना मैडम खुद सामान लेकर होम आती हैं और बच्चों से मिलती हैं, बात करती हैं, शुभकामनाएं भी देती हैं।

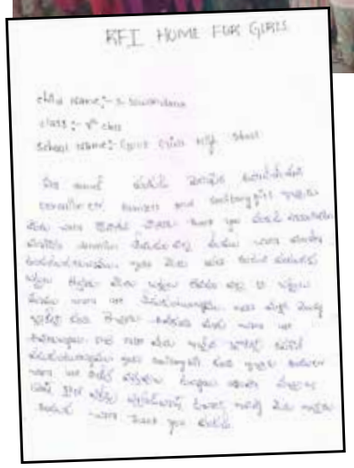

रमज़ान के दौरान वह बच्चों के लिए नई पोशाकें और मिठाइयाँ भेजती हैं, जिससे हमारा त्योहार खुशियों से भर जाता है। सेनेट्री किट में हमें शैंपू, साबुन, ब्रश, हैंडवाश, तौलिया, पैड आदि दिए जाते हैं। यह राहत की बात है कि अच्छे दानदाता मदद के लिए आगे आते हैं और जरूरी वस्तुएं होम के बच्चों के लिए उपलब्ध कराते हैं। इन सभी चीजों के लिए हम पंखुड़ी वेलफेयर एसोसिएशन के बहुत आभारी हैं।

सोनंदना, 9वीं, गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल, रेनबो होम, फलकनुमा

Making CHAMPIONS OUT OF KIDS

For the last three years Akshita Jaiswal madam is associated as volunteer at SRD Rainbow Home, Begumbazar. Akshita Jaiswal is an international karate player. She has won many medals and certificates. She is giving karate training to our SRD Rainbow Home Children twice weekly on Wednesdays and Saturdays. Currently, she is training 20 children at Home. Most of these children have participated in District and National levels tournaments, and many of them have won medals and certificates. She has brought out hidden talent among children and made them strong to play and participate anywhere. SRD director Srinivas sir, Shivarani Madam and all the team members have encouraged and supported children a lot. Two children, Anjali Kumari Singh and Nithya Srivastav went to Lucknow to participate in National Vovinam Championship and won Bronze Medal at the national level. Earlier, few children- Anjali Kumari Singh, Nithya Srivailor, B. Ramya, B. Akhila, E. Renuka, Riya Kumari Singh, Rajini, Manora, have won medals at District level. We are grateful to SRD Rainbow Home for encouraging children and Akshita madam in believing in them.

SRD Rainbow Home, Begumbazar

बच्चों को चैंपियन के रूप में ढालना

बीते तीन साल से अक्षिता जायसवाल मैडम एसआरडी रेनबो होम, बेगमबाजार से वॉलंटियर के रूप में जुड़ी हैं। अक्षिता जायसवाल अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कराटे खिलाड़ी हैं। उन्होंने कई पदक और अवार्ड जीते हैं। वह एसआरडी रेनबो होम के बच्चों को हफ्ते में दो बार- बुधवार और शनिवार को कराटे की ट्रेनिंग दे रही हैं। अभी कुल 20 बच्चे उनसे ट्रेनिंग हासिल कर रहे हैं, जिनमें से ज्यादातर जिला व राष्ट्रीय स्तर के मुकाबलों में हिस्सा ले चुके हैं, और उनमें से कई पदक और सर्टीफिकेट भी जीत चुके हैं।

उन्होंने होम के बच्चों में छुपी हुई प्रतिभा को बाहर निकाला और उन्हें कहीं भी खेलने और भाग लेने के लिए मजबूत बनाया। एसआरडी निदेशक श्रीनिवास सर, शिवरानी मैडम और टीम के सभी सदस्यों ने बच्चों को बहुत प्रोत्साहित किया है। दो बच्चे- अंजली कुमारी सिंह और निथ्या श्रीवास्तव नेशनल वोविनाम चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिए लखनऊ गए और उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर ब्रोंज मेडल प्राप्त किया। इससे पहले भी कुछ बच्चे- अंजलि कुमारी सिंह, निथ्या श्रीवेलोर, बी. राम्या, बी. अखिला, ई. रेनुका, रिया कुमारी सिंह, रजनी, मनोरा आदि जिला स्तर पर पदक जीत चुके हैं। एसआरडी रेनबो होम ने अपनो बच्चों को मदद दी और अक्षिता जायसवाल मैडम ने बच्चों में भरोसा किया तो वे चैंपियन के रूप में निखरे।

एसआरडी रेनबो होम, बेगमबाजार

How her time made PRECIOUS CHANGES

Madam Padmaja, 61 years, a retired teacher from a government School and currently working as a headmistress in a Private school is a soft spoken, always smiling lady who has been volunteering in Nightingale Home for Girls, Musheerabad for the past 2 years. She teaches science – physics and chemistry and also clarifies doubts in biology for children of 9th and 10th class. Apart from help in studies, she is a great influence on children. Every evening she spends almost two hours with adolescents in Home and apart from studies she also talks to children to understand them, advises them to lead a disciplined life, develop good habits, maintain hygiene and have good values to succeed in life.

After coming to Home and spending a couple of years here, Krutima feels herself lucky for being tutored by Padmaja madam.

She is liked by all and the children look forward to her classes daily. On the Teacher's day, children honored her. Speaking on the occasion she asked the children to utilize the opportunities available to them at the Home and study well to lead a dignified life. She said, life can be made simple and pleasant and even the most difficult problems will be solved.

Krutima came to Home when she was in 8th class, as her mother was without any support from her husband or any other family members. Thus, she was unable to take care of her and provide her any sort of proper education. After coming to Home and spending a couple of years here, Krutima feels herself lucky for being tutored by Padmaja madam.

Krutima says, she is a very good teacher and deals with lots of patience while giving the lessons and explains in details the lessons in various subjects. If I have any doubts in other subjects like Mathematics, Telugu and English Grammar, that too she explains very clearly. She also guides on how my behaviour should be. We are very grateful for her to give precious time to us.

She teaches science – physics and chemistry and also clarifies doubts in biology for children of 9th and 10th class. Apart from help in studies, she is a great influence on children. Every evening she spends almost two hours with adolescents in Home and apart from studies she also talks to children to understand them,

Nightingale Home for Girls, Musheerabad

उनके समय से कैसे अहम परिवर्तन हुए

पद्मजा मैडम की उम्र 61 वर्ष है। एक सरकारी स्कूल से रिटायर्ड शिक्षिका औरइस समय एक निजी स्कूल में प्रधानाध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं। वह मृदुभाषी, हमेशा मुस्कुराती रहने वाली महिला हैं और पिछले 2 वर्षों से नाइटिंगेल होम फॉर गर्ल्स, मुशीराबाद में वॉलंटियरिंग कर रही हैं। वह 9वीं और 10वीं कक्षा के बच्चों को फीजिक्स व केमेस्ट्री जैसे विज्ञान के विषयों को पढ़ाती हैं और जरूरत पढ़ने पर बायोलॉजी में भी बच्चों की शंकाओं को दूर करती हैं। पढ़ाई में मदद करने के अलावा उनका बच्चों पर काफी व्यक्तिगत प्रभाव भी है। वह हर शाम इन बच्चियों के साथ 2 घंटे बिताती हैं और पढ़ाई के अलावा बच्चों से बात करके उन्हें समझती हैं, जीवन में सफल होने के लिए अनुशासित जीवन जीने, अच्छी आदतें डालने, स्वच्छता बनाए रखने और अच्छे मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

सभी बच्चे उन्हें बहुत पसंद करते हैं और रोजाना उनकी क्लास का इंतजार करते हैं। इस बार शिक्षक दिवस पर बच्चों ने उन्हें सम्मानित किया था और इस अवसर पर उन्होंने बच्चों से होम में उपलब्ध अवसरों का उपयोग करने और एक सम्मानजनक जीवन जीने के लिए अच्छी पढ़ाई करने की बात कही थी। उनका कहना था कि जीवन सरल और सुखद बनाया जा सकता है और कठिन से कठिन समस्याओं को दूर करा जा सकता है।

उन्हें पसंद करने वालों में 10वीं में पढ़ने वाली कृतिमा भी है। कृतिमा को होम में तब शामिल किया गया जब वह 8वीं कक्षा में थी। उसकी मां को पति या परिवार के किसी भी सदस्य से सहयोग नहीं मिलता था, लिहाजा वह उसकी देखभाल करने और उचित शिक्षा प्रदान करने में भी असमर्थ थी। तब कृतिमा होम में आई और दो साल बीत जाने के बाद कृतिमा खुद को सौभाग्यशाली मानती हैं कि उसे पद्मजा मैडम से गाइडेंस मिलता है। कृतिमा कहती हैं, वह बहुत अच्छी टीचर हैं। वह पढ़ाते समय बहुत धैर्य रखती हैं और विज्ञान को विस्तार से समझाती हैं। यदि मुझे गणित, तेलुगु और अंग्रेजी जैसे अन्य विषयों में भी कोई शंका होती है तो वह बहुत स्पष्ट रूप से बताती है। वह यह भी सलाह देती है कि मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए। अपना समय बच्चों को देने के लिए हम सब उनके शुक्रगुजार हैं।

तब कृतिमा होम में आई और दो साल बीत जाने के बाद कृतिमा खुद को सौभाग्यशाली मानती हैं कि उसे पद्मजा मैडम से गाइडेंस मिलता है। कृतिमा कहती हैं, वह बहुत अच्छी टीचर हैं। वह पढ़ाते समय बहुत धैर्य रखती हैं और विज्ञान को विस्तार से समझाती हैं। यदि मुझे गणित, तेलुगु और अंग्रेजी जैसे अन्य विषयों में भी कोई शंका होती है तो वह बहुत स्पष्ट रूप से बताती है।

नाइटिंगेल होम फॉर गर्ल्स, मुशीराबाद

HYDERABAD

Celebrating DEDICATION TO CHILDREN

Our Journey with Mukunda Mala Madam began in 2013 when she joined Aashray Balatejassu Home, dedicating three years to the well-being of the children. During her time at Coromandel, she actively participated in all national festivals, celebrating Christmas and Bathukamma with the children, while consistently providing support to both girls and boys. From 2016 onwards, she focused her attention on the boys at the home, launching the "Save Boys Home" initiative. She meticulously managed their daily schedules, coordinated with two schools to ensure their education, and tirelessly worked to improve their living conditions.

At Monda Market School, she spearheaded efforts to secure funding and upgrade facilities. This included securing additional rooms with the support of the District Education Officer, enhancing the kitchen, and adding shelves to create a more comfortable and conducive environment for the children. Recognizing the vital importance of consistent support, Mala Madam diligently built strong relationships with donors, both through her work at Coromandel and through her own initiatives. This ensured that both girls and boys received regular assistance.

Beyond providing for their basic needs, Mala Madam offered crucial financial and emotional support to the children. She guided them through their academic journeys, assisting with their studies and ensuring they had the resources to succeed. Notably, she helped one child enroll in a Polytechnic course and supported another in joining IIIT. She consistently encouraged and guided students towards pursuing higher education, whether in private colleges or other institutions. Furthermore, Mala Madam is actively engaged in Child Protection policy as a member, where she has provided valuable guidance on various aspects of child rights.

Naveen Raj Puli, ASHRAY Organization Head

बच्चों के प्रति गहरा समर्पण

मुकुंद माला मैडम के साथ हमारी यात्रा 2013 में शुरू हुई थी, जब वह आश्रय बालातेजस्सू होम में आईं और उन्होंने बच्चों की बेहतरी के लिए तीन साल पूरी निष्ठां से काम किया। कोरोमंडल में अपने समय के दौरान, उन्होंने सभी राष्ट्रीय त्योहारों में सक्रिय रूप से भाग लिया, बच्चों के साथ क्रिसमस और बथुकम्मा मनाया, होम की सभी लड़कियों और लड़कों को लगातार सहायता प्रदान करती रहीं। 2016 के बाद से, उन्होंने "सेव बॉयज़ होम" पहल शुरू करते हुए अपना ध्यान उन पर फोकस किया। उन्होंने सावधानीपूर्वक बच्चों की दैनंदिनी को नियोजित किया, उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए दो स्कूलों के साथ बातचीत की और बच्चों की जीवन स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए प्रयास किया।

मोंडा मार्केट स्कूल में, उन्होंने बच्चों के लिए फंडिंग हासिल करने के लिए और सुविधाओं को बेहतर बनाने का प्रयास किया। इसमें जिला शिक्षा अधिकारी के सहयोग से होम में बच्चों के रहने के लिए ज्यादा कमरों का इंतजाम कराना , रसोई को बेहतर बनाना और बच्चों के लिए आरामदायक और अनुकूल वातावरण बनाने के लिए होम में सामान रखने के लिए ज्यादा अल्मारियाँ का इंतज़ाम कराना शामिल था। बच्चों के लिए निरंतर अहमियत को समझते हुए, माला मैडम ने कोरोमंडल में अपने काम और अपनी कई तरह की पहल, दोनों ही तरीकों से दानदाताओं के साथ मज़बूत रिश्ते बनाए। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि लड़कियों और लड़कों दोनों को नियमित मदद मिलती रहे।

बच्चों की बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के अलावा, माला मैडम ने बच्चों को आर्थिक और भावनात्मक सहायता भी प्रदान की। उन्होंने बच्चों की शऔक्षणिक यात्रा में उनका मार्गदर्शन किया, उनकी पढ़ाई में सहायता की और यह सुनिश्चित किया कि उनके पास आगे बढ़ने के लिए साधन हों। उन्होंने एक बच्चे को पॉलिटेक्निक कोर्स में दाखिला लेने में मदद की और दूसरे के IIIT में शामिल होने का रास्ता बनाया। उन्होंने छात्रों को उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए निरंतर प्रोत्साहित किया, चाहे वह निजी कॉलेजों में हो या अन्य संस्थानों में। इसके अलावा, माला मैडम एक सदस्य के रूप में बाल संरक्षण नीति में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं, जहां वह बाल अधिकारों के विभिन्न पहलुओं पर उपयोगी दिशानिर्देश आती रही है।

नवीन राज पुलि, आश्रय बालतेजस्सु, आश्रय संगठन प्रमुख

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

CHENNAI

Giving back SOMETHING TO SOCIETY

My first visit to Rainbow Home in Chetpet, Chennai was a humbling and life-changing experience. The children at the Rainbow Home are resilient, hopeful, and eager to learn. They may have lost their parents or have no family to care for them; however, here they all are a part of one big family.

My friends and I have decided to contribute to the Rainbow Home on a regular basis. For the past 10 years, we have worked as a team to provide the children with stationery, dresses, sanitary items, and special foods. I believe that everyone should visit home and see the beautiful children who are thirsty for our love. Let us all try to do something for these lovely children. Visiting them will rid us of all depression and frustrations and give a new meaning to our lives. I feel that donations made to Rainbow Home would go a long way in supporting these institutions. It is also a way to show our love and affection for these beautiful kids. Let us all together give back something to society.

B. Jayasubha, Donor, AMJ Rainbow Home, Chetpet, Chennai

समाज को कुछ देने की पहल

मेरी पहली मुलाकात बच्चों से चेटपेट, चेन्नई में हुई थी। मेरे लिए यह एक बहुत ही विनम्र और जीवन बदलने वाला अनुभव था। रेनबो होम के बच्चे खुशदिल, उम्मीद रखने वाले और सीखने के प्रति उत्साही हैं। रेनबो होम्स के बच्चों ने हो सकता है अपने माता-पिता को कभी न देखा हो या फिर उन्हें खो दिया हो या उनकी देखभाल के लिए उनके पास कोई परिवार न हो, लेकिन यहां वे सब एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं।

इन बच्चों और रेनबो होम्स का काम देखते हुए मैंने और मेरे दोस्तों ने रेनबो होम में योगदान देने का निर्णय लिया। पिछले 10 वर्षों से, हमने बच्चों को स्टेशनरी, ड्रेस, सैनिटरी आइटम और विशेष भोजन उपलब्ध कराने के लिए एक टीम के रूप में काम किया है। मेरा मानना है कि हर किसी को एक बार तो रेनबो होम में आना चाहिए और उन खूबसूरत बच्चों को देखना चाहिए जिन्हें हमारे प्यार की जरूरत है।

हमें इन प्यारे बच्चों के लिए मिलकर कुछ करने की कोशिश करनी चाहिए। इन बच्चों को देखकर आप अपने सभी ग़म और परेशानियां भूल जाएंगे और मुझे लगता है कि हमारे जीवन को एक नया अर्थ व नज़रिया मिलेगा। रेनबो होम को दी गई मदद इन संस्थानों को बढ़ाने में काफी मदद करती है। यह इन खूबसूरत बच्चों के प्रति अपना प्यार और स्नेह दिखाने का भी एक तरीका है और समाज को कुछ लौटाने का मौका।

बी. जयसुभा, दानदाता, एएमजे रेनबो होम, चेटपेट, चेन्नई

Volunteers give us NEW LEARNINGS

I am a student of Class X at Loreto Convent Entally Rainbow Home. I feel fortunate to receive support from volunteers and well-wishers every month, which help us learn new things. The Khelo rugby team, kick boxing coach, and Bhumi Volunteers for English class and dance class regularly visit us. I particularly enjoy kickboxing, where Coach Partho Sir always encourages me and my friends, boosting our confidence and coordination. His support, along with those of Inner Wheel club of Halden Avenue and Unity Organization, motivates me to do my best.

I was thrilled to win a Gold Medal at the Kickboxing Association Kolkata's Inter-House Championship on December 12, 2024. Bhumi Volunteers have helped in improving my English skills through engaging activities. Priti Didi from Bhumi Dance Step also came to teach us dance. I love to do western hip-hop dance. Besides, Nisha Jaiswal Didi taught us to make handmade chocolates, which was a very valuable skill. All the volunteers and my home team have been providing us with excellent opportunities.

Preety Thakur, Class X,
Loreto Entally Convent Rainbow Home, Kolkata

वालंटियर्स सिखा रहे रोज नया कौशल

मैं अपने आपको भाग्यशाली महसूस करती हूं कि मुझे हर महीने वालंटियर्स और शुभचिंतकों से समर्थन मिलता रहा है, जिससे हमें नई चीजें सीखने में मदद मिलती है। खेलो रग्बी टीम, किक बॉक्सिंग कोच और अंग्रेजी क्लास और डांस क्लास के लिए भूमि वालंटियर्स नियमित रूप से हमारे यहां आते हैं। मैं विशेष रूप से किकबॉक्सिंग का आनंद लेती हूं, जहां कोच पार्थो सर हमेशा मुझे और मेरे दोस्तों को हौसला देते हैं जिससे हमारा आत्मविश्वास और एक दूसरे के बीच समन्वय बना रहता है। उनके और इनर व्हील क्लब ऑफ हैल्डेन एवेन्यू और यूनिटी ऑर्गनाइजेशन की मदद से मुझे मेरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलती रहती है।

बीती12 दिसंबर 2024 को किकबॉक्सिंग एसोसिएशन कोलकाता की इंटर-हाउस चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतकर मैं बहुत रोमांचित हूं। भूमि वालंटियर्स ने कई तरह की गतिविधियों की मदद से मेरी अंग्रेजी को काफी सुधारा है। इसके अलावा भूमि डांस स्टेप प्रोग्राम से प्रीति दीदी हमें डांस सिखाने भी आईं। मुझे वेस्टर्न हिप-हॉप डांस बहुत पसंद है। इसके अलावा, निशा जयसवाल दीदी ने मुझे चॉकलेट बनाना सिखाया, जो एक एक खास कौशल है। सभी वालंटियर्स और रेनबो होम टीम हमें इस तरह की कई काबिलियत में माहिर कर रहे हैं।

प्रीति ठाकुर, कक्षा 10, लोरेटो कान्वेंट
एंटल्ली कांवेंट रेनबो होम, कोलकाता

Dream of BECOMING A SPORTS COACH

I am a student of Class X at Loreto Convent Entally Rainbow Home. I feel very fortunate to receive support from volunteers and well-wishers every month, which helps us learn new things. I love playing sports and consider myself a sports enthusiast. Every Wednesday, I eagerly wait for our rugby coach, and if he doesn't come, I feel very sad. The Khelo Rugby team volunteers are incredibly energetic, and watching them makes me hope that one day I will become a sports coach, guiding others with the same friendly attitude and playful activities. As a member of the sports club, I take responsibility for managing our sports equipment and ensure that the girls attend kickboxing, rugby, and basketball classes. I am truly grateful to all our volunteers, the Loreto Rainbow Home team, and our respected sister for providing us with these valuable opportunities

Babita Thakur, Class X,
Loreto Entally Convent Rainbow Home, Kolkata

खेल कोच बनने की चाहत

मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ कि मुझे मैं हर महीने वालंटियर्स और शुभचिंतकों से समर्थन मिलता है, जिससे हमें नई चीजें सीखने में मदद मिलती है। मुझे खेल पसंद है और मैं खुद को खेल-प्रेमी मानती हूं। हर बुधवार को मैं अपने रग्बी कोच का बेसब्री से इंतजार करती हूं और अगर वह नहीं आते तो मुझे बहुत निराशा हो जाती हूँ। खेलो रग्बी टीम के वालंटियर्स बहुत ही अलग ढंग और ऊर्जा से भरे हैं, उन्हें देखकर मेरे मन में भी एक आशा जागती है कि एक दिन मैं स्पोर्ट्स कोच बनूँगी और इसी तरह के दोस्ताना रवैये और विविध गतिविधियों के साथ दूसरों का मार्गदर्शन करुँगी। स्पोर्ट्स क्लब के सदस्य के रूप में, मेरे पास हमारे खेल उपकरणों की देख-रेख की जिम्मेदारी है और मैं यह सुनिश्चित करती हूं कि लड़कियां किकबॉक्सिंग, रग्बी और बास्केटबॉल कोचिंग में नियमित भाग लें। यह बेशकीमती मौका प्रदान करने के लिए मैं हमारे सभी वालंटियर्स, लोरेटो रेनबो होम टीम और हमारी होम सिस्टर्स की शुक्रगुजार हूं।

बबीता ठाकुर, कक्षा 10, लोरेटो एंटल्ली
कॉन्वेंट रेनबो होम, कोलकाता

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథీ • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

RANCHI

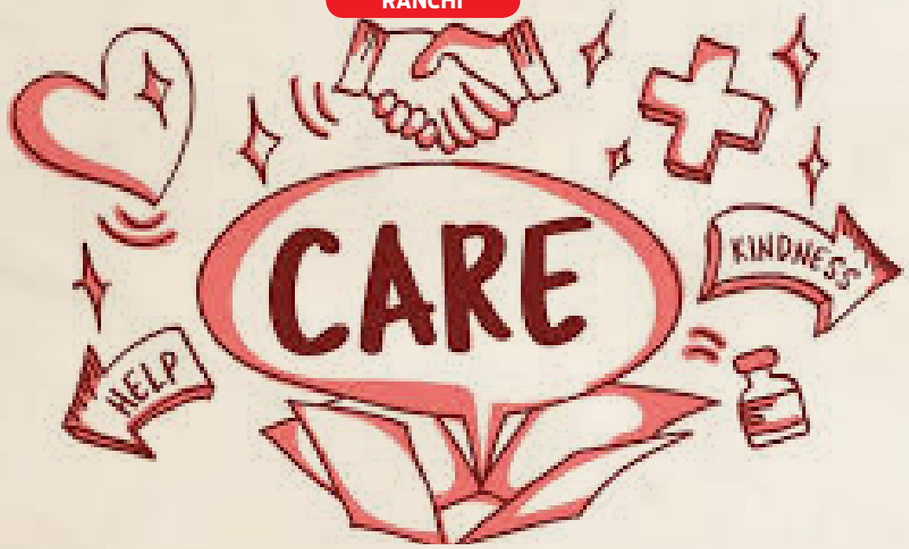

The making of a CHILDCARE VOLUNTEER

During my post-graduate from Jamia Millia Islamia, New Delhi, I was associated with a local NGO in 2006 as a volunteer. This NGO has been working with the street and working children for their comprehensive care like education, health, child rights, emotional well-being, career growth and skills development. Apart from me, 9 more volunteers were associated with this organization and all of them were from different Universities like Jawaharlal Nehru University, Delhi University, Aligarh Muslim University, and Patna University, etc. It was a small and young organization. I

received information from my supervisor about what kind of intervention should be done with children on the streets. More than 10 areas in Delhi were identified where higher no of street children were present like New Delhi, Old Delhi and Nizamuddin railway stations, Jama Masjid, Hanuman Mandir (CP), Hanuman Mandir (Yamuna Pushta), Rohini, Nizamuddin Dargah, Modi Mill Flyover etc.

We were told that direct work with children can be undertaken in different ways. On streets, we had seen that some children were staying with their single or both parents, some children were orphan and staying at railway stations without parents. They were from rural areas of Bihar, UP, MP, Jharkhand, Assam and Rajasthan etc. They all were staying on the streets without roof, or any facility of water, toilets, bathrooms and electricity. Police and municipality authorities will torture them day and night. There were no anganwaris in those areas and no one had any identity document. Their situation was very pathetic, and children kept roaming from one place to another, engaging themselves in begging, rag picking, selling water bottles at stations, etc. None of them was enrolled in the school. Some of them were even into consuming drugs and other substances.

Initially, we were not aware of kind of interventions needed with these children as we all were first timers. Then we visited some homes under Social Welfare Dept. Children are usually sent to childcare institutions under orders from Child Welfare Committee.

As a volunteer, our daily routine was to meet children in the parks, railway stations, religious places, market areas, bus stands etc. Winter season used to be most difficult for the children, as they slept without proper blankets on the street. There are many children in the national capital for whom the open sky is the only roof.

Our job was to meet children, understand their problems, mapping them with NGOs for their services like health care, counselling, drug deaddiction, etc. We used to talk with them about the Rights of Children based on United Nations Convention of Children, awareness about the child rights, good touch and bad touch, personal hygiene. We were also involved in advocacy with concerned governments departments like Delhi Commission for Protection of children Rights (DCPCR). Child Welfare Committee, Juvenile Justice Board, Social Welfare Dept, Sarva Shiksha Abhiyan etc.

During my volunteering period I got a chance to visit many organizations who are working with childcare and child rights, such as Mobile Creche, Don Bosco, Butterflies and Salam Balak Trust etc.

I learnt two things during my volunteering period. Firstly, children feel happy when a volunteer meets them on the street and shakes hands with them because they always being neglected and society has been a taboo to them. Secondly, I learnt that without winning their trust or creating a rapport, it would be difficult to work with them.

I am frequently asked why I am volunteering. I am also told that it is good to give back to the society. While this might be partly true, but I feel that more importantly, I get more than I give. I have largely worked with the street children, which is close to my heart. It gives me an opportunity to learn several new things, meet and interact with a large a number of amazing persons and derive deep satisfaction. I have learnt a lot from the people at organisation as well as my other team members, some of whom were experienced hands in the field while I had zero knowledge of the same. After six months of volunteering in the organization, I became a full timer because I had done the work with my heart and commitment.

Md Anwarul Haque,
Senior Manager, Rainbow Homes Program, Patna and Ranchi

एक वॉलंटियर तैयार होने की कहानी

दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया से पोस्ट ग्रेजुएशन के दौरान, मैं 2006 में एक वालंटियर के रूप में स्थानीय गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) अमन बिरादारी ट्रस्ट से जुड़ा था। अमन बिरादारी सड़क पर रहने वाले बच्चों के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बाल अधिकार, भावनात्मक कल्याण, करियर विकास और उनके कौशल विकास जैसी व्यापक देखभाल के लिए काम कर रहा है। मेरे अलावा, 9 और वॉलंटियर्स संगठन से जुड़े थे और सभी जवाहर लाल विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय और पटना विश्वविद्यालय आदि से आए थे। यह छोटा और नया संगठन था। संगठन में अनुभवी लोगों ने हमें बताया कि हमें फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों के बीच किस तरह से काम करना है। हमने दिल्ली में 10 से अधिक ऐसी जगहों की पहचान की जहां सड़क पर रहने वाले बच्चों की संख्या अधिक थी, जैसे नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली और निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन, जामा मस्जिद, सीपी व यमुना पुश्ता के हनुमान मंदिर, रोहिणी, निज़ामुद्दीन दरगाह, मोदी मिल फ्लाईओवर आदि।

हमें बताया गया कि बच्चों के बीच सीधा काम कई तरीकों से किया जा

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

सकता है। जब हम सड़कों पर पहुंचे तो हमने देखा कि कुछ बच्चे अपने माता-पिता या दोनों में से किसी एक के साथ रह रहे हैं। कुछ बच्चे अनाथ थे और रेलवे स्टेशनों पर रह रहे थे। ज्यादातर बिहार, यूपी, एमपी, झारखंड, असम व राजस्थान आदि के ग्रामीण इलाकों से आए थे। ये सब बगैर किसी छत के सड़कों पर रह रहे थे जहां बिजली-पानी, बाथरूम जैसी कोई बुनियादी सुविधा नहीं थी। पुलिस और नगर पालिका के लोग दिन-रात उनका शोषण करते थे। उन क्षेत्रों में आंगनवाड़ी की कोई सुविधा नहीं थी और न किसी के पास पहचान का कोई दस्तावेज था। उन लोगो की स्थिति बहुत दयनीय थी और बच्चे एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे और भीख मांगने, कचरा बीनने, पानी की बोतलें बेचने के काम में लगे हुए थे। स्कूल में किसी का दाखिला नहीं हुआ था। कुछ बच्चे नशे की लत का भी शिकार थे।

चूंकि हम सब पहली बार इस काम में थे, इसलिए शुरू में हमें इस बात का कोई आभास नहीं था कि इन बच्चों के बीच कैसे काम करना है। हमने ऐसे कुछ होम्स का दौरा किया जो समाज कल्याण विभाग के तहत चल रहे थे। अक्सर बच्चों को बाल कल्याण समिति के आदेश के साथ विभिन्न चाइल्ड केयर संस्थानों में भेजा जाता था।

एक वालंटियर के रूप में, हमारी दिनचर्या पार्क, रेलवे स्टेशन, धार्मिक स्थानों, बाज़ारो, बस स्टैंड आदि पर बच्चों से मिलने से शुरू होती थी। सर्दी का मौसम सबसे विकट होता था। बच्चे सड़क पर बिना कंबल के सोते थे। देश की राजधानी में ऐसे बच्चों की तादाद बहुत बड़ी है जिनके लिए खुला आसमान ही एकमात्र छत है। झोपड़ियाँ उजाड़ दिए जाने से भी कई बच्चे बेघर हो जाते हैं।

हमारा काम था बच्चों से मिलना, उनकी दिक्कतों को समझना और, स्वास्थ्य सुविधाएं, काउंसलिंग और नशा मुक्ति के लिए उन्हें संबद्ध गैर सरकारी संगठनों से मिलाना। हम उनसे बच्चों के अधिकारों, अच्छे व बुरे

संपर्क, निजी साफ-सफाई आदि के बारे में बताते थे। इसके अलावा हम दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग (डीसीपीसीआर), बाल कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड, सामाजिक कल्याण विभाग, सर्व शिक्षा अभियान आदि विभागों के साथ इन बच्चों के लिए एडवोकेसी का काम भी करते थे।

मुझे इस दौरान कई संगठनों को देखने का मौका मिला जो बच्चों की देखभाल और बाल अधिकारों के लिए काम कर रहे हैं जैसे कि मोबाइल क्रेच, डॉन बॉस्को, बटरफ्लाइज़ और सलाम बालक ट्रस्ट आदि।

चाइल्डकेयर वॉलंटियर रहते मैंने दो बड़ी बातें सीखीं सीखीं, एक यह कि जब हम सड़कों पर रहने वाले बच्चों से मिलते हैं और उनसे हाथ मिलाते हैं तो उन्हें खुशी होती है क्योंकि समाज हमेशा उन्हें नीची निगाह से देखता है। एक और बात जो मैंने उनसे सीखी वह यह कि उनका विश्वास जीते बिना या मेलजोल बनाए बिना, उनके बीच काम करना मुश्किल होता है।

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि मैं वॉलंटियरिंग क्यों करता हूं। क्या मुझे यह करने में अच्छा लगता है क्या मैं समाज को इसके ज़रिये कुछ वापस दे रहा हूँ। यह बात कुछ हद तक भले ही सही हो लेकिन मुझे लगता है कि ज्यादा बड़ी वजह यह है कि मैं जितना देता हूं उससे अधिक समाज से पाता हूं। मैंने मुख्य तौर पर सड़क पर रहने वाले बच्चों के साथ काम किया है, जो मेरे दिल के करीब हैं। मुझे कई नई चीजें सीखने, बड़ी संख्या में अनूठे लोगों से मिलने, बातचीत करने और तसल्ली पाने का अवसर मिलता है। मैंने संगठनों और अपनी टीम के अन्य सदस्यों से भी बहुत कुछ सीखा है, जिनमें से कुछ एनजीओ क्षेत्र में अनुभवी थे, जबकि मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। छह महीने तक वालंटियर के रूप में काम करने के बाद, मैं फुल टाइम काम करने लगा क्योंकि मैंने अब तक दिल लगाकर और पूरी ईमानदारी से काम किया था।

मो. अनवारुल हक,
सीनियर मैनेजर, रेनबो होम्स प्रोग्राम,
पटना व रांची

Securing a BRIGHTER FUTURE FOR EVERY CHILD is the Mission

I have been working as a manager with U & I in Patna for the last one and half years, and it has been such a rewarding journey! Along with my amazing team, we have recruited dedicated volunteers and successfully conducted more than 20 classes in this academic year alone.

U & I has been working in Patna at Sneh Ghars (both boys Hostels- Mushkurahat Sneh Ghar and Umang Sneh Ghar) for the past three years, creating a nurturing and empowering environment for students.

Every Sunday, our dedicated volunteers spend two and half hours engaging with students, teaching English and life skills while fostering meaningful relationships to support their holistic growth. This year, we proudly expanded our efforts to other Rainbow Homes , bringing our impactful program to more children.

Our success would not be possible without the incredible support of our partners, Home Management Coordinators Nitu Srivastava and Sanjay Roy. Their trust, collaboration, and generosity in providing the space and freedom to connect with students have been instrumental in making a difference. Together, U & I and Rainbow Homes share a common vision of securing a brighter future for every child. With shared passion and commitment, we continue to work hand-in-hand to help these young minds dream big and achieve their goals.

Bindu, Teach Manager, City Manager, Patna, U & I

हर बच्चे के लिए चमकदार भविष्य सुनिश्चित करना ही सपना है

मैं पिछले डेढ़ साल से पटना में यु एंड आई में मैनेजर के पद पर काम कर रही हूं। यु एंड आई के साथ मेरा अभी तक का सफर बहुत अच्छा रहा है। अपनी शानदार टीम के साथ मिलकर हमने समर्पित वॉलंटियर्स की भर्ती की है और नतीजतन केवल इस शैक्षणिक वर्ष में ही 20 से ज़्यादा कक्षाएं सफलतापूर्वक संपन्न कराई हैं।

यू एंड आई पिछले तीन साल से पटना में स्नेह घर (लड़कों के हॉस्टल- मुस्कुराहट स्नेह घर और उमंग स्नेह घर) के साथ मिलकर काम कर रही है। हम बच्चों को विकसित करने और सशक्त बनाने वाला माहौल देने में कामयाब हुए हैं। हर रविवार हमारे समर्पित वॉलंटियर्स ढाई घंटे बच्चों के साथ बिताकर उन्हें अंग्रेजी बोलना और जीवन कौशल तो सिखाते ही हैं, साथ ही उनके समग्र विकास को मदद देने के लिए सार्थक संबंध बनाने को बढ़ावा देते हैं। इस साल, हम अपने प्रयासों को अन्य रेनबो होम्स तक लेकर जाने में सक्षम रहे हैं, जिससे हमारा प्रभावशाली कार्यक्रम अधिक बच्चों तक पहुंचा है।

हमारी कामयाबी हमारे सहयोगियों, होम मैनेजमेंट कॉर्डिनेटर नीतू श्रीवास्तव और संजय रॉय की मदद और उनके साथ के बिना संभव नहीं होती। उनके भरोसे, सहयोग और उदारता ने छात्रों से जुड़ने के लिए एक खुली जगह और आजाद ख्याल उपलब्ध कराया जिससे बदलाव लाने का रास्ता खुला है। यू एंड आई और रेनबो होम्स बच्चों के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने की परिकल्पना को साझा करते हैं। दोनों संस्थाए साझे उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ, इन युवा दिमागों को बड़े सपने देखने और लक्ष्य हासिल करने में मदद देने के लिए मिलकर काम करना जारी रखेंगी।

बिन्दु, टीच मैनेजर,
सिटी मैनेजर -पटना, यू एंड आई

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Each child here is a shining star, BRIMMING WITH DREAMS

I completed my PhD on the issue of 'Rights and Well-Being of Children in Bihar', with Special reference to the Right to Protection in Patna. Currently, I am coordinator at the Child Rights Centre, Chanakya National Law University, Patna. I am also a Pannel Resource Faculty Member, at Bihar Institute of Public Administration & Rural Development (BIPARD), Patna.

As a proud member of the Child Protection Committee (CPC) at Khilkhilahat Rainbow Home, it gives me immense joy and honor to share my heartfelt feelings about this remarkable place, its inspiring children, and the commendable infrastructure developments it has achieved. Khilkhilahat Rainbow Home is not just a hostel, it is a sanctuary of hope and opportunity for countless children who have faced hardships beyond their years. The dedication and relentless efforts of the team in nurturing these young lives are truly commendable.

Each child here is a shining star, brimming with potential, dreams, and resilience. Their smiles, their laughter, and their determination to overcome challenges serve as a constant source of inspiration to all of us. The recent infrastructure developments at the premises stand as a testament to the collective commitment to creating a safe, nurturing, and empowering environment for these children. From well-furnished living areas to vibrant recreational spaces, every corner of the premises echoes the ethos of care and progress. These advancements not only enhance the quality of life for the children but also contribute to their holistic growth and development. Being a part of the CPC for this organization has been an enriching experience for me personally. It has reinforced my belief in the power of community and the impact of collective action.

The vision and mission of this organization resonate deeply with me, and I am proud to contribute to its journey of transforming lives, especially in the field of Child Protection. Together, we are not just shaping a better future for these vulnerable children but also building a brighter tomorrow for our society.

Dr. Chandan Kumar Sinha,
Coordinator, CNLU- CRC, Member of CPC, Khilkhilahat Rainbow Home, Patna

यहां हर बच्चा एक जगमगाता सितारा है

मैं ने बिहार में बच्चों के अधिकारों और कल्याण के मुद्दे पर पीएचडी की जिसमें मेरा विशेष फोकस पटना जिले में सुरक्षा के अधिकार पर रहा। इस समय मैं बाल अधिकार केंद्र, चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, पटना में कोऑर्डिनेटर के रूप में काम कर रहा हूं। मैं बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड रूरल डेवलपमेंट (BIPARD), पटना में पैनल रिसोर्स फैकल्टी मेंबर भी हूं। खिलखिलाहट रेनबो होम की बाल संरक्षण समिति (सीपीसी) के एक सदस्य के तौर पर मुझे इस शानदार जगह, यहां के बच्चों और इसके बुनियादी ढांचे के सराहनीय विकास के बारे में अपनी भावनाओं को साझा करने में मुझे बहुत खुशी और सम्मान महसूस हो रहा है। खिलखिलाहट रेनबो होम सिर्फ एक हॉस्टल नहीं है बल्कि यह उन अनगिनत बच्चों के लिए उम्मीद और अवसर हासिल करने की एक अनूठी जगह है, जिन्होंने अपनी छोटी की उम्र से अधिक परेशनियों का सामना किया है। इन युवा जिंदगियों को पोषित करने में टीम का समर्पण और निरंतर प्रयास वास्तव में सराहनीय हैं। यहां का प्रत्येक बच्चा एक जगमगाता सितारा है, जिसमें काबिलियत, सपनों और दृढ़ता की चमक भरी है। उनकी मुस्कुराहट, उनकी हँसी और चुनौतियों पर विजय पाने का उनका दृढ़ संकल्प हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

रेनबो होम्स में हाल ही में ढांचागत बेहतरी इन बच्चों के लिए एक सुरक्षित, पोषक और सशक्त वातावरण बनाने की सामूहिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। होम का हर कोना देखभाल और प्रगति के भाव को दिखाता है। यह प्रगति न केवल बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है बल्कि उनके समग्र विकास में भी योगदान देती है। इस संगठन में सीपीसी का हिस्सा बनना मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से एक कामयाब अनुभव रहा है। होम्स ने समुदाय की शक्ति और सामूहिक अभियान में मेरे विश्वास को मजबूत किया है। इस संगठन का दृष्टिकोण और मिशन मुझसे गहराई से जुड़ा है, और मुझे जीवन को बदलने की इस यात्रा में अपना योगदान देने पर फख्र है, खासकर बाल संरक्षण के क्षेत्र में। हम सब मिलकर न केवल इन बच्चों के लिए बेहतर भविष्य का, बल्कि अपने समाज के लिए एक उज्जवल कल का भी निर्माण कर रहे हैं।

डॉ चंदन कुमार सिन्हा, कोऑर्डिनेटर, सीएनएलयू-सीआरसी, सीपीसी सदस्य, खिलखिलाहट रेनबो होम, पटना

To give FLIGHT TO THEIR DREAMS

I and my wife Meenakshi have been associated with Muskurahat Sneh Ghar, Patna for last two years. I came to know about this organisation through a friend of mine. Then once I got to spend some time with the children here. When I met these kids, I felt that they too have big dreams and they also want to reach to greater heights in the life. The need is of the people who can put wings to their dreams. I couldn't' control my emotions after meeting these children. This is the reason, I couldn't get away from them. I feel fortunate that because of this organisation, I got an opportunity to come among these children. I try my best to help them, so that I can be part of efforts to keep their studies running and together a change is brought in the society.

Captain Deepak,
donor, Muskurahat Sneh Ghar, Patna

बच्चों के सपनों को पंख लगाने की जरूरत

मैं और मेरी पत्नी मीनाक्षी मुस्कुराहट स्नेह घर, पटना से पिछले दो साल से जुड़े हैं। मुझे इस संस्था के बारे में मेरे एक दोस्त के जरिये जानकारी मिली थी। एक बार मुझे यहां बच्चों के बीच कुछ समय बिताने का मौका मिला। उन बच्चों से मिलकर मुझे यह महसूस हुआ कि इन बच्चों की आंखों में भी बड़े सपने हैं, वे भी अपने जीवन में कुछ बड़ा करना चाहते हैं। बस जरूरत ऐसे लोगों की है जो उनके सपनों में पंख लगा सके। उनसे मिलकर मैं अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाया। यही कारण ही कि मैं इन बच्चों से दूर नहीं जा सका। यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि इस संस्था के जरिये मुझे इनके बीच आने का मौका मिलता है। मुझसे जितना हो पाता हैं, मैं इन बच्चों की मदद करता हुईं ताकि इन बच्चों की पढ़ाई जारी रहे और समाज मे बदलाव आए।

कैप्टन दीपक, डोनर, मुस्कुराहट स्नेह घर, पटना

KOLKATA

Volunteers have SHAPED LIFE IN MULTIPLE WAYS

Education valuably propagated by the volunteers has shaped me in a variety of ways. Every teacher who comes to nurture and enlighten us with knowledge makes us feel interested to listen and enhance our day-to-day life. Random ordinary moment have preserved in my mind as precious memories.

I learn a lot about life and uplifting my personality development after being part of educational initiatives taken by our volunteers. Various awareness programs make me focus oriented about wants and needs and lead for betterment towards my mental health. The activities enjoyed joyfully with our volunteers make me focus enough to utilize it in future after I pass out from school. I aspire to start a business in handmade artwork after I finish my higher education. Storytelling is a trending topic which also I learnt from one of the volunteers, Tanushree Di. It has helped me to further excel my listening and speaking skills and express myself in front of larger audience. The rugby classes have made me better in terms of fitness and physical flexibility. All the volunteers have inspired me and make me grow as a good human being. Under their guidance, I aspire to shine and achieve lots of success in life.

Koyal Prasad Roy, Class IX, Loreto Rainbow Home, Bowbazar, Kolkata

वालंटियर्स ने जीवन को कई तरह से गढ़ा है

रेनबो होम में हमें वालंटियर्स से मिल रही काफी उपयोगी शिक्षा ने मेरे जीवन को कई तरह से आकार दिया है। जो भी शिक्षक हमारे होम में ज्ञान देने और नई चीज सिखाने आते हैं, उससे हमारे रोजमर्रा के जीवन की गुणवत्ता में खासा सुधार हुआ है। उनके साथ के बेहतरीन अनुभव मेरे दिमाग में अनमोल यादों और समझ के रूप में अंकित हो गए हैं।

वालंटियर्स द्वारा हमें सिखाने के लिए की गई अलग-अलग तरह की पहल ने हमें जीवन के बारे में काफी सिखाया है और मेरे व्यक्तित्व का विकास किया है। विभिन्न तरह की गतिविधियों ने मुझे मेरी ख़्वाहिशों और जरूरतों के बारे में सचेत किया है और मेरी मानसिक सेहत को बेहतर बनया है। हमारे वालंटियर्स के गढ़े प्रोग्राम मुझे स्कूल से निकलने के बाद आगे के रास्ते पर मजबूती से बढ़ने के लिए फोकस देंगे। मैं आगे की पढ़ाई पूरी करने के बाद हस्तनिर्मित कला में अपना एक व्यवसाय शुरू करने की इच्छा रखती हूं। वालंटियर तनुश्री दी की किस्सागोई की कला ने मुझे बेहतर श्रोता और बेहतर वक्ता बनाया है और दूसरों के सामने खुद को अभिव्यक्त करने का आत्मविश्वास जगाया है। इसी तरह रग्बी क्लासेज ने मुझे फिटनेस और शारीरिक लचीलेपन को बरकरार रखने में मदद दी है।

सभी वालंटियर्स ने मुझे प्रेरित किया है और एक बेहतर इंसान बनने का रास्ता दिखाया है। उनके मार्गदर्शन में मैं नई कामयाबियां हासिल करने की उम्मीद रखती हूं।

कोयल प्रसाद राय,
कक्षा 9वीं, लोरेटो रेनबो होम, बोबाज़ार, कोलकाता

Volunteers give HOPE FOR BRIGHT FUTURE

I feel very lucky to have a lot of human resources around me, as they made my life better in many ways. In my 'Teach for India' class, volunteers teach me subjects like Math and English, making my studies fun & easier to understand. This has helped me in improving my schoolwork and feel more confident. Khelo Rugby coaches also visit my shelter home to teach Rugby. I love playing the sport, as it makes me strong, teaches teamwork, and helps me make new friends.

Volunteers from different organisations also hold awareness sessions. They teach me about hygiene, safety, and healthy habits, which I found very useful. I feel grateful for their care and guidance. Their efforts have made me healthier, more active, and giving me hope for a bright future.

Nandini Naskar, Class IV, Loreto Rainbow Home, Bowbazar, Kolkata

सुनहरे भविष्य की उम्मीद जगाते हैं वॉलंटियर्स

मैं अपने आसपास ज्ञान के प्रचुर संसाधन पाकर बहुत अच्छा महसूस करती हूं, क्योंकि होम ने कई मायनों में मेरे जीवन को बेहतर बनाया है। मेरी टीच फॉर इंडिया क्लास में, वालंटियर्स मुझे गणित और अंग्रेजी जैसे विषय पढ़ाते हैं, जिससे मुझे पढ़ाई करने में मज़ा आता है और समझने में भी आसानी होती है। इससे मुझे अपना स्कूल वर्क सुधारने और आत्मविश्वास में भी महसूस करने में मदद मिली। खेलो रग्बी कोच भी रग्बी सिखाने के लिए मेरे हमारे रेनबो होम में आते हैं है। मुझे खेल खेलना पसंद है, क्योंकि यह मुझे मजबूत बनाता है, टीम वर्क सिखाता है और नए दोस्त बनाने में मदद करते है।विभिन्न संगठनों के वॉलंटियर्स भी होम आकर जागरूकता सेशन लेते हैं। वे स्वच्छता, सुरक्षा और अच्छी आदतों के बारे में सिखाते हैं, जो मुझे बहुत ज़रूरी लगा। मैं सभी वालंटियर्स और रेनबो होम की टीम की आभारी हूँ। उनके प्रयासों ने मुझे स्वस्थ, एक्टिव बनने में मदद दी है और मुझे उज्ज्वल भविष्य और अच्छा जीवन जीने की आशा दिखाई है।

नंदिनी नस्कर, कक्षा IV, लोरेटो रेनबो होम, बोबाज़ार, कोलकाता

A world of experiences WITH GLOBAL VOLUNTEERS

One of the most exciting things about living here at Rainbow Home is the visits from international volunteers.

These amazing people come from all over the world, bringing with them different languages, cultures, and perspectives. We learn so much through spending time with them. We play games, share stories, and learn about their lives back home. It's like having the world come to us!

Even though their way of life is different from ours, we find common ground in laughter, friendship, and a shared love for learning. We learn new words and phrases, and they try to learn a few Bengali words too! It's a wonderful exchange of cultures.

Saying goodbye is always hard. We cherish the memories we've made with them and the new things we've learned. We express our gratitude through handmade crafts and thank you cards.These experiences with international volunteers are truly special. The friendships we forge with these volunteers will stay with us forever.

Namita Das, Class XI, Loreto Rainbow Home, Sealdah

वॉलंटियर्स के साथ दुनिया भर के अनुभव

रेनबो होम में रहने के बारे में सबसे रोमांचक चीजों में से एक अंतरराष्ट्रीय वालंटियर्स का होम में दौरे पर आना है। ये लोग दुनिया भर से आते हैं और अपने साथ विभिन्न भाषाएँ, संस्कृतियाँ और चीज़ो को देखने का अलग-अलग नजरिया लेकर आते हैं। हम उनके साथ समय बिताकर बहुत कुछ सीखते हैं। हम खेल खेलते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं और उनके जीवन की कहानी के बारे में समझते हैं। उन सबके आने से ऐसा लगता है कि मानो दुनिया हमारे पास आ गई हो। उनका जीवन जीने का तरीका भले ही हमसे अलग है, लेकिन हम एक ही तरह से हँसते हैं और दोस्ती व प्यार बाँटते हैं। हम नए शब्द बोलना सीखते हैं, और वे सब भी हमसे थोड़ी-थोड़ी बांग्ला सीखने का प्रयास करते हैं। इस तरह होम में संस्कृतियों का अदान-प्रदान होती रहता है। ऐसे लोगों को अलविदा कहना हमेशा सबसे मुश्किल होता है। हम उनके साथ बनाई गई यादों और सीखी गई नई चीजों को संजोकर रखते हैं। हम हाथ से बनाई चीजों और थैंक यू कार्ड के माध्यम से अपना आभार व्यक्त करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय वालंटियर्स के साथ ये अनुभव वास्तव में बहुत ख़ास हैं। इन वालंटियर्स के साथ हमने जो दोस्ती बनाई है वह हमेशा हमारे साथ रहेगी।

नमिता दास,
कक्षा 11वीं, लोरेटो रेनबो होम, सियालदह

PATNA

From house-help to a HOTEL ADMINISTRATOR

Jaho Parveen experienced poverty, hardship, and abuse. Her father's alcoholism and poor health, coupled with her mother's meager income as a day laborer, pushed the family to the brink of starvation. But Jaho never gave up. Forced into child labor as a domestic worker and subjected to mental and physical abuse, she never lost hope. Her life began to change shortly after she joined BGVS Rainbow Homes in 2016.

Rainbow Homes helped in the transformation of Jaho's life. She learned to read and write, got enrolled in school, and completed her 12th grade. Jaho's hardworking nature and love of learning propelled her forward. Jaho's determination didn't end there. She completed a vocational course in F&B Service + MOA. Today, she works as an office administrator at 7 Hills Hotel & Resort in Nalanda.

Jaho is proud of her achievements and grateful for the support of Rainbow Home. Rainbow Homes' interventions, including monthly parent meetings and health camps, have also helped her family. They are now conscious of the importance of education, health, and hygiene. They have obtained Aayushman cards and managed to receive their treatment. Jaho's narrative is a great illustration of how commitment and education can overcome even the toughest obstacles. Today, Jaho is committed to furthering her studies while working in her new role.

Jaho Perween,
Gyan Vigyan Samiti, Danapur, Cant, Patna

घरों में काम करने से लेकर होटल में नौकरी तक

जाहो परवीन ने रेनबो होम आने से पहले शोषण, गरीबी व मुश्किलों का जीवन जीया था।। पिता की शराब की लत के कारण उनकी खराब सेहत और दिहाड़ी मजदूर के रूप में मां की बेहद मामूली कमाई ने परिवार को भुखमरी के कगार पर धकेल दिया था। लेकिन जाहो ने कभी हार नहीं मानी। बच्ची होने के बावजूद घरों में काम करने को मजबूर होने और मानसिक व शारीरिक शोषण झेलने के बावजूद, उसने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी। 2016 में बीजीवीएस रेनबो होम्स आने के बाद से उसका जीवन बदलने लगा।

रेनबो होम्स ने जाहो के जीवन को बदलने में बहुत मदद की। उसने पढ़ना-लिखना सीखा, और फिर स्कूल में दाखिला लिया और 12वीं कक्षा पास की। जाहो के मेहनती स्वभाव और सीखने के प्रयास ने उन्हें आzगे बढ़ाया। जाहो का दृढ़ संकल्प यहीं खत्म नहीं हुआ। उन्होंने एफ एंड बी सर्विस + एमओए में वोकेशनल कोर्स पूरा किया। आज, वह नालंदा में 7 हिल्स होटल एंड रिज़ॉर्ट में एक ऑफिस एडमिनिस्टेटर के रूप में काम करती हैं।

जाहो को अपनी उपलब्धियों पर गर्व है और वह रेनबो होम से मिली मदद के लिए बहुत आभारी है। रेनबो होम में हर महीने होने वाली पीटीएम और हेल्थ कैंप समेत रेनबो होम्स की तमाम पहलों ने भी उसके परिवार की काफी मदद की है। वे अब शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक हैं। उनके परिवार को आयुष्मान कार्ड मिल गया है और अब बीमारियों के इलाज में उन्हें सुहूलियत मिल गई है। जाहो की आपबीती इस बात का बड़ा उदाहरण है कि कैसे दृढ़ इच्छाशक्ति और शिक्षा से बड़ी बाधाओं को भी पार किया जा सकता है। आज, जाहो अपनी नई भूमिका में काम करते हुए अपनी पढ़ाई को भी आगे बढ़ाने का इरादा रखती है।

जाहो परवीन,
ज्ञान विज्ञान समिति, दानापुर, कैंट, पटना

A testament TO DETERMINATION

Rekha's family is from Karauta, Patna. Her family was facing financial problems, and eventually her mother joined the Rainbow Home. She briefly worked at Rajbanshi Nagar Rainbow Home before relocating to Vikasaarth Rainbow Home, Rekha along with her.

Rekha participated in a bridge course prior to her admission to Class 7. Initially, she faced difficulties in maintaining her concentration during her academic pursuits. Eventually, she developed interest in studies with the assistance of her sister, teachers, and fellow volunteers. With dedication in studies, Rekha passed her class 10th exam in first place despite the challenges of online classes and coaching.

Rekha's talents extended beyond academics, as she also participated in extracurricular activities like dancing and painting, for which she won medals. Rekha continued to excel, passing her Grade 12 exams in first place. After completing her secondary education, Rekha enrolled in banking SSC coaching at Mahendra's institute. Along with SSC preparation, she also enrolled in a B.Sc. degree program. Currently, she is working at a sub-divisional hospital in Darbhanga as an admissions clerk for the "A.N.M. training school". Rekha's journey is a testament to her determination and hard work as she constantly strives for a brighter future.

Rekha Kumari, **Gharaunda Vikasaarth Rainbow Home, Anisabad, Patna**

दृढ़ इच्छाशक्ति का नमूना

रेखा का परिवार करौटा, पटना का रहने वाला है। आर्थिक परेशानियों की वजह से रेखा की माँ ने रेनबो होम्स में नौकरी शुरू की। पहले उन्होंने राजवंशी नगर रेनबो होम्स में कुछ समय काम किया और फिर विकासार्थ रेनबो होम्स आ गईं। रेखा भी उनके साथ ही थी।

रेखा ने 7वीं कक्षा में दाखिला लेने से पहले ब्रिज कोर्स किया। शुरू में उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता था और ध्यान लगाने में बहुत परेशानी होती थी। धीरे-धीरे अपनी बहन, टीचर्स और साथियों की मदद से वह पढ़ाई में रुचि लेने लगी थी। पढ़ाई में मेहनत की बदौलत रेखा ने 10वीं की परीक्षा में पहला स्थान हासिल किया था जबकि उस समय ऑनलाइन क्लास व कोचिंग की बड़ी चुनौतियां सामने थीं। रेखा की प्रतिभा सिर्फ पढ़ाई तब सीमित नहीं रही और वह डांस और पेंटिंग जैसी गतिविधियों में भाग लेती रही और उनमें कई अवार्ड जीते। रेखा ने मेहनत करना जारी रखा और 12वीं में भी वह अव्वल रही।

सेकेंडरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद, रेखा ने महेंद्र इंस्टीट्यूट में बैंक में भर्ती की एसएससी (SSC) कोचिंग में दाखिला लिया। साथ-साथ उसने बीएससी में भी दाखिला ले लिया। इस समय वह दरभंगा के एक उप-विभागीय अस्पताल में "ए.एन.एम. ट्रेनिंग स्कूल " के लिए एंट्री क्लर्क के रूप में काम कर रही हैं। रेखा का अब तक का जीवन एक उज्जवल भविष्य के लिए उसके अथक प्रयास और दृढ़ इच्छाशक्ति का सबूत है।

रेखा कुमारी, घरौंदा विकासार्थ रेनबो होम, अनीसाबाद, पटना

PATNA

From rag picking TO HOSPITALITY

Sarita was born in 2000 and grew up in a time of hardship and struggle. After her father died, she and her siblings had to work as a rag picker. Her mother used to sell homemade alcohol. Since, household income was very low, they often didn't had enough food to eat. But Sarita's life started changing shortly after she joined BGVS Rainbow Homes in 2014.

Rainbow Homes helped Sarita transform her life. She learned to read and write, got enrolled in school, and discovered a passion for extracurricular activities. Average in academics, but Sarita's hardworking nature and love of learning propelled her forward. She completed her 10th and 12th grades with second division and pursued a B.A. degree.

Sarita's determination didn't end there. She looked for a job to support her family, and with the help of Rainbow Home and the Pratham Education Foundation, she completed a vocational course in F&B Service + MOA. Today, along with Jaho Perween, she also works as an office administrator at 7 Hills Hotel & Resort in Nalanda.

Rainbow Homes' interventions, including monthly parent meetings and health camps, have also helped her family. Her mother no longer makes alcohol, and her family's condition has improved significantly. Sarita's story inspires us to believe in the power of human potential. She is determined to continue her studies and achieve even greater things.

Sarita Kumari, Gyan Vigyan Samiti, Danapur, Cant, Patna

कूड़ा बीनने के काम से रिजॉर्ट तक का सफर

सरिता का जन्म सन 2000 में हुआ था उसका जीवन बड़ा परेशनियों और संघर्ष भरा रहा है। सरिता के पिता की मृत्यु के बाद, उसे और उसके भाई-बहनों को कूड़ा बीनने का काम करना पड़ा। सरिता की माँ देसी शराब बनाकर बेचती थीं, लेकिन घर की आय बहुत कम थी, इसलिए कई बार उन लोगों को भूखे पेट सोना पड़ता था। फिर, 2014 में बीजीवीएस (BGVS) रेनबो होम्स में शामिल होने के बाद से सरिता का जीवन बदलने लगा।

सरिता ने रेनबो होम में भर्ती होने के बाद ही पढ़ना-लिखना सीखा, स्कूल में दाखिला लिया और पढाई के अलावा अन्य गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया। सरिता पढ़ाई में तो औसत थी, लेकिन अपने मेहनती स्वभाव और सीखने के जुनून से आगे बढ़ती रही। उसने 10वीं और 12वीं कक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की और बीए की पढ़ाई की।

सरिता का दृढ़ संकल्प यहीं खत्म नहीं हुआ। अपने परिवार को पालने के लिए उसने नौकरी की तलाश की और रेनबो होम व प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन की मदद से एफ एंड बी (F&B) + एमओए (MOA) वोकेशनल कोर्स पूरा किया। इस समय, वह नालंदा में 7 हिल्स होटल एंड रिज़ॉर्ट में ऑफिस एडमिनिस्ट्रेटर के रूप में काम कर रही हैं।

रेनबो होम्स से उसके परिवार को बड़ा संबल मिला है। सरिता की माँ अब शराब नहीं बेचतीं और परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरी है। सरिता की कहानी हमें इंसानी क्षमता की ताकत में यकीन दिलाती है। सरिता आगे पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया है ताकि वह नई ऊंचाइयां छू सके।

सरिता कुमारी,
ज्ञान विज्ञान समिति, दानापुर, कैंट पटना

Big ambitions lead to HIGHER STUDIES

Sudama lives in Patna with his mother Kanti Devi, his two brothers and a sister. After his father Shiv Balak Manjhi passed away, he started collecting garbage at Karpuri Bhawan near Sheikhpura in Patna. He was never enrolled in a formal school before coming to Rainbow Home. His siblings stay with mother at Karpuri Bhawan. Karpuri Bhwan was built by Government of Bihar for the people of marginalised community. When Sudama came to Rainbow Home, he was 9 years old and ten years have passed since then.

He passed 12th from Bihar Intermediate Education Council, Patna in 2023 while he was at Umang Sneh Ghar, Kumharar. After that he got an opportunity to go to Bengaluru for higher studies and pursue his career. He came to Bengaluru in August 2024. He was given Anita Kaul scholarship of Rainbow Homes Program (RHP) to complete his bachelor's degree. He is pursuing BA in Psychology from Loyala Degree college, Bengaluru. Along with studies, he also participates in extra curriculum activities, and have been given many certificates.

Initially he found it bit difficult to manage in Bengaluru as he knew nothing about Kannada language and his English was weak. But now he has been able to speak a little English and his friends in class also support him a lot. In the psychology practical program at the college, they are taught to understand and study psychology through dance and music. After completing his studies, Sudama wants to prepare for civil services.

Sudama Kumar, Umang Sneh Ghar, Kumharar, Patna

बड़े सपनों के दम पर आगे की पढ़ाई

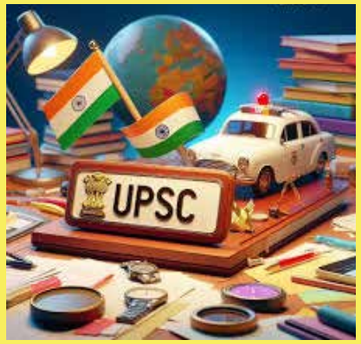

सुदामा अपनी माँ कांति देवी, दो भाइयों और एक बहन के साथ पटना में रहता है। पिता शिव बालक मांझी के निधन के बाद, सुदामा ने शेखपुरा के पास कर्पूरी भवन में कूड़ा बीनना शुरू कर दिया था। यह भवन बिहार सरकार द्वारा पिछड़े तबके के लोगों के लिए बनाया गया था। 2014 में, जब सुदामा 9 साल का था, तब उसका दाखिला उमंग स्नेह घर में हुआ। रेनबो होम में आने से पहले सुदामा का कभी किसी स्कूल में दाखिला नहीं नहीं हुआ था। इस बात को अब दस साल से ज्यादा बीत चुके हैं।

सुदामा ने 2023 में कुम्हरार के उमंग स्नेह घर में रहते हुए बिहार माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से 12वीं की पढ़ाई पूरी की। उसके बाद उसे आगे की पढ़ाई के लिए बेंगालुरु आने का मौका मिला। रेनबो होम प्रोग्राम (आरएचपी) की अनीता कॉल स्कॉलरशिप

हासिल करके अब सुदामा बेंगालुरु के लोयला डिग्री कॉलेज में साइकोलॉजी में ग्रेजुएशन की पढ़ाई कर रहे हैं। कॉलेज में, पढाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी वह हिस्सा ले रहे हैं और कई सारे अवार्ड भी जीते हैं। शुरू में भाषा की दिक्कत के कारण बेंगालुरु में सुदामा को बहुत मुश्किल हुई। उसकी बोलचाल की अंग्रेजी भी कमजोर थी। लेकिन अब दोस्तों की मदद से सुदामा थोड़ी-थोड़ी अंग्रेजी बात कर लेते हैं। विश्वविद्यालय के साइकोलॉजी प्रैक्टिकल प्रोग्राम में, वह नृत्य और संगीत के माध्यम से साइकोलॉजी को समझना और उसका मूल्यांकन भी सीखते हैं। सुदामा आगे सिविल सेवा के लिए इम्तिहान देना चाहते हैं।

सुदामा कुमार,
उमंग स्नेह घर, कुम्हरार, पटना

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

CHENNAI

Engineering a SUCCESSFUL CAREER!

I am currently pursuing a Bachelor of Engineering in Computer Science and Engineering at Sri Venkateswara College of Technology, located in Kancheepuram district. I lost both my parents at a young age. In this difficult situation, my relatives decided to take me and my sister to a NGO, where our journey started in a hostel. Since then, I have grown up entirely in a hostel environment, so I am not very familiar with a typical family lifestyle. Despite this, I have truly enjoyed my journey.

In 2014, during the middle of my 5th standard, I joined AKP Rainbow Home in Kosapet, Chennai. I was provided with healthy food, quality education, and many opportunities to grow. As I grew up, I participated in various programs conducted by Rainbow Home, which helped me learn many valuable skills. I actively attended life skills training, adolescent training, and other workshops. I never missed any of these opportunities, as they were instrumental in shaping me.

With the support of Rainbow Home, I have not only gained an education but also grown into a confident and capable individual. I am very happy to share that I am now on the verge of completing my Bachelor of Engineering degree.

Why I Chose to Become an Engineer

My journey toward becoming an engineer started in 5th grade when a Bhoomi volunteer visited my school to teach English reading, computer basics, and handcraft. During their sessions, I expressed my curiosity about engineering, and their guidance inspired me to dream of becoming an engineer.

By 8th grade, I briefly considered becoming an air hostess, but my passion for engineering reignited after my 12th-grade results, where I scored an impressive 435/600. While choosing my next steps, Lakshmi Priya ma'am played a pivotal role. She encouraged me to pursue engineering and

The journey wasn't easy. Failing three subjects in my first semester made me think of quitting. However, Priya ma'am motivated me to continue

guided me in applying for the first-graduate certification.

In 2021, I began my engineering studies. The journey wasn't easy. Failing three subjects in my first semester made me think of quitting. However, Priya ma'am motivated me to continue. Around the same time, I joined Katalyst through Rainbow Home, an organization that became a cornerstone of my academic success.

Katalyst provided me with invaluable support: mentorship, online sessions, and even a laptop to aid my professional growth. The program helped me clear my arrears, refine my skills, and build a network through events like the outbound program in Bangalore and visits to IT companies. Monthly mentor meetings allowed me to identify and work on my strengths and weaknesses, helping me grow both personally and professionally.

I have learned to overcome challenges, seize opportunities, and uncover my potential. This experience has shaped me into a resilient and confident individual ready to take on the challenges of an engineering career.

Many people and opportunities have been part of this journey. They have not only inspired me but also enabled me to turn my dream of becoming an engineer into a reality.

M. Selvi,

Young Adult, AKP Rainbow Home, Kosapet, Chennai

इंजीनियरिंग में कामयाबी की राह

मैं कांचीपुरम में श्री वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी से कंप्यूटर साइंस में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग कर रही हूं। मैंने कम उम्र में ही अपनी मां और पिता दोनों को खो दिया था। उस कठिन समय में, मेरे रिश्तेदारों ने मुझे और मेरी बहन को एक एनजीओ के पास भेजा, जहां एक हॉस्टल से हमारी यात्रा शुरू हुई। तब से, मैं पूरी तरह से हॉस्टल के माहौल में पली-बढ़ी हूँ, इसलिए मैं सामान्य पारिवारिक माहौल से बहुत परिचित नहीं हूं। इसके बावजूद, मैंने अपनी अब तक के जीवन सफर का बहुत आनंद लिया है।

साल 2014 में, जब मैं 5वीं कक्षा में थी तब मैं कोसापेट, चेन्नई में एकेपी रेनबो होम में आई। यहां मुझे पोषक भोजन, शिक्षा और आगे बढ़ने के कई सारे अवसर मिले। जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, मैंने रेनबो होम द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया, जिससे मुझे कई महत्वपूर्ण हुनर सीखने में मदद मिली। मैंने स्किल ट्रेनिंग, किशोर ट्रेनिंग और अन्य वर्कशॉप्स में सक्रिय रूप से भाग लिया। मैंने इनमें से कोई भी अवसर कभी नहीं छोड़ा, क्योंकि इन सभी ट्रेनिंग्स ने मुझे मेरे जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रेनबो होम की मदद से, मैंने न केवल शिक्षा प्राप्त की बल्कि मैं आत्मविश्वास से भरपूर होकर सक्षम भी बनी हूं। मैं अब अपनी बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की डिग्री पूरी करने के कगार पर पहुंच गई हूं।

इंजीनियर बनने की मेरी यात्रा 5वीं कक्षा से शुरू हो गई थी जब भूमि वालंटियर्स हमे अंग्रेजी पढ़ाने, शुरुआती कंप्यूटर की बातें और शिल्पकारी सिखाने के लिए मेरे स्कूल में आये थे। उनके सेशंस के दौरान, मैंने इंजीनियरिंग के बारे में अपनी जिज्ञासा बताई थी और उनके मार्गदर्शन ने मुझे इंजीनियर बनने का सपना देखने के लिए प्रेरित किया।

जब मैं 8वीं कक्षा में थी तो मैंने उस समय एयर होस्टेस बनने के बारे में सोचा था, लेकिन 12वीं के बाद इंजीनियरिंग के प्रति मेरा जुनून फिर से जाग गया। मेरे अगले कदम चुनते समय, लक्ष्मी प्रिया मैडम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मुझे इंजीनियरिंग करने के लिए बढ़ावा दिया और आवेदन करने में मेरा मार्गदर्शन किया।

साल 2021 में, मैंने अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। यह सफर मेरे लिए आसान नहीं था। पहले ही सेमेस्टर में तीन विषयों में फेल होने से पर मन में इंजीनियरिंग छोड़ने का ख्याल जागा। हालाँकि, प्रिया मैडम ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उसी समय, मैं रेनबो होम के माध्यम से कैटलिस्ट में शामिल हो गई और यह संगठन मेरी अकादमिक सफलता का आधार बन गया।

कैटालिस्ट ने मुझे मेंटरशिप, ऑनलाइन सेशंस और यहां तक कि मेरे प्रोफेशनल विकास में मदद के लिए मुझे एक लैपटॉप भी प्रदान किया था। इस कार्यक्रम ने मुझे अपना बकाया चुकाने, अपने हुनर को निखारने और बैंगलोर में आउटबाउंड प्रोग्राम और आईटी कंपनियों के दौरे जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से एक नेटवर्क बनाने में मदद की। मासिक सलाहकार मीटिंग्स ने मुझे अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानने और उन पर काम करने की गुंजाइश दी, जिससे मुझे व्यक्तिगत और प्रोफेशनल दोनों रूप से आगे बढ़ने में मदद मिली।

मैंने चुनौतियों पर काबू पाना, अवसरों का लाभ उठाना और अपनी क्षमता को उजागर करना सीखा है। इस अनुभव ने मुझे इंजीनियरिंग करियर की चुनौतियों का सामना करने के लिए लचीली और आत्मविश्वासी लड़की के रूप में तैयार किया है। कई लोग और अवसर मेरी इस यात्रा के मार्गदर्शक रहे हैं। उन सबने मुझे प्रेरित किया और इंजीनियर बनने के मेरे सपने को हकीकत में बदलने में मुझे सक्षम बनाया।

एम. सेल्वी,

यंग एडल्ट , ए के पी रेनबो होम,
कोसापेट, चेन्नई

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೈನ್‌ಬೋ ಸಾಥಿ • রেইনবো সাথী

RANCHI

Khushbu Kumari
10th A, RFI, Ranchi

बालिका दिवस पर कविता

घर आंगन महकाती है
खुशियां ही फैलाती हैं
चंचल होती नादान बेटियां
माँ बाप का मान बेटियां।

बेटी है तो ही कल है
ना हो तो सूना हर पल है
घर की होती शान बेटियां
माँ बाप का मान बेटियां।

ईश्वर की सौगात हैं बेटियां
सुबह कि पहली किरण हैं बेटियां
त्याग और समर्पण सिखाती हैं बेटियां
नए-नए रिश्ते बनाती हैं बेटियां

लोगों को कौन बताये बोझ नहीं होती
हैं बेटियां
जिस घर प्यार उजाला फैलाती हैं बेटियां
हर किसी के नसीब में कहाँ होती हैं बेटियां
जीवन में खुदा की रहमत बनकर आती
हैं बेटियां

Anamika Kumari
9th A, RFI, Ranchi

Rohit Munda
11th A, RFI, Ranchi

बालिका दिवस

बेटी भार नहीं है संसार में,
जीवन है, उसका अधिकार शिक्षा है;
उसका अधिकार बढ़ाव कदम करी
बेटियों को स्वीकार करें।

बेटियों से है संसार का भविष्य
बेटी है अमिट स्वरूप करती है,
हर घर की रौशनी।

बेटियों का दिन है या खास
शिक्षा का दान है सब बेटियों
को हासिल,

बेटी को मत समझो भार, ये है तो
जीवन का आधार, जीने का
इनको भी अधिकार,
बेटी को मत समझो भार

धन्यवाद

Prayer | प्रार्थना | ಪ್ರಾರ್ಥನೆ

God!
Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!
We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

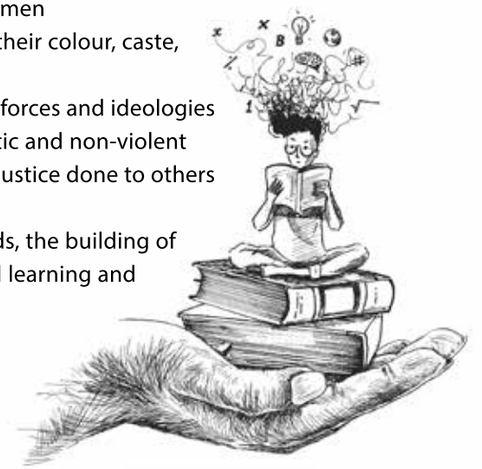

ईश्वर अल्लाह

हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

ನಿಮ್ಮಲ್ಲಿ ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಮಗು
ಆಹಾರ ಪ್ರೀತಿ, ಸುರಕ್ಷತೆ ಮತ್ತು
ಶಿಕ್ಷಣದಿಂದ ವಂಚಿತರಾಗದಿರಲಿ
ಇದು ನಮ್ಮ ಪ್ರಾರ್ಥನೆ
ನಮ್ಮ ಹಾಗೂ ನಮ್ಮ ಸುತ್ತಮುತ್ತಲಿನ
ಎಲ್ಲರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಸಂತೋಷ
ಹಾಗೂ ಪ್ರೀತಿಯನ್ನು ಕರುಣಿಸಿ.

NEWSLETTER OF RAINBOW HOMES

(for private circulation only)

Rainbow Homes

EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

OPEN HEARTS, OPEN GATES

H.No. 1/3/183/40/21/51
Flat no 202, K K Rao Residency
P&T colony, Gandhinagar , Hyderabad - 500080